## अभग ४८ (राग: झिंजोटी – ताल: त्रिताल)

सोडोनी आपुलें कर्म। सदा वर्ततो अधर्म। शरण आलो बलभीमा। करी अपराधातें क्षमा।।१।। ज्ञान भाषण वरी वरी। कपट भरलें अंतरी।।२।। नसे सुबुद्धि वासना। करी संताची छळणा।।३।। धर्म केलो नाहीं कवडी। बहविषय आवडी।।४।। भजनालागी नाहीं

केलो नाहीं कवडी। बहुविषय आवडी।।४।। भजनालागी नाहीं प्रेमा। वृत्ती रतली रित कामा।।५।। क्षमा अपराध हा करीं माणिकदास अंगिकारी।।६।।